International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण का अध्ययन

पंकज यादव[1], प्रो.(डा.) दीप्ति जौहरी[2]

[1]शोध–छात्र, शिक्षाशास्त्र, बरेली कॉलेज, बरेली (एम.जे.पी.रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली)
[2]प्रभारी, शिक्षाशास्त्र विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली।

सारांश
भारतीय शिक्षा के ढांचे के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह स्तर है, जब विद्यार्थी भावी नागरिक के रूप में अपने जीवन को आकार देने की शुरुआत कर देते हैं। जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया विद्यार्थियों के शैक्षणिक व सामाजिक जीवन को बेहद गहराई से प्रभावित करने का कार्य करती है, जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों के जीवन के विभिन्न पक्ष प्रभावित होते हैं, जो उनके सम्पूर्ण जीवन की दिशा व दशा तय करने का कार्य करते हैं। जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को अपनी जेंडर भूमिकाओं के अनुरूप विभिन्न कार्य करने हेतु प्रेरित करती है। कभी–कभी यह जेंडर्ड भूमिकायें विद्यार्थियों की नैसर्गिक क्षमताओं को प्रभावित करती हैं। जेंडर्ड व्यवहार और जेंडर भूमिकाओं का प्रभाव अलग–अलग विद्यार्थियों में अलग–अलग प्रकार का हो सकता है। वर्तमान अध्ययन के माध्यम से अध्ययनकर्ता द्वारा बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है, अध्ययन हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा साधारण यादृच्छिक विधि से बदायूं जनपद के कुल 142 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है, जिनसे स्वनिर्मित शोध उपकरण **जेंडर समाजीकरण मापनी** के माध्यम से आंकड़े एकत्रित कर उनके जेंडर समाजीकरण में विभिन्नताओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्दः जेंडर समाजीकरण, जेंडर भूमिकायें, जेंडर्ड व्यवहार, उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी।

अवधारणात्मक पृष्ठभूमिः
जेंडर एक प्रकार की सामाजिक संरचना है और जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्तियों की आकांक्षाओं, उनके कैरियर चुनावों और उनके शैक्षणिक निर्णयों को प्रभावित करती है। जन्म के बाद से ही समाजीकरण के विभिन्न अभिकरण जैसे परिवार, विद्यालय, साथी समूह व मीडिया आदि बालकों को जेंडर आधारित मानदण्डों और अपेक्षाओं से परिचित कराने का कार्य करते हैं और उन्हें इन्हीं अपेक्षित मानदण्डों और अपेक्षाओं के अनुरुप व्यवहार करने हेतु प्रेरित करते हैं। इस प्रकार जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया सभी बालकों के जीवन के तमाम पक्षों को प्रभावित करने का कार्य करती है। विशेष रूप से किशोरावस्था के आयुवर्ग में जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्तियों के जीवन की विभिन्न दशाओं और दिशाओं को निर्धारित करने में विशेष भूमिका निभाती है।
भारतीय सामाजिक व्यवस्था का स्वरूप भी पितृसत्तात्मक ही रहा है और यह पितृसत्तात्मक संरचना जेंडर आधारित मानदण्डों को निर्धारित करने का कार्य करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक जेंडर भूमिकाओं की संरचना सुदृढ़ होती है। उत्तर प्रदेश का बदायूं जनपद एक पिछड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता है, चूंकि यहां की अधिकांश आबादी की जड़ें ग्रामीण परिवेश से जुड़ी हुई है। इसी कारण यहां के निवासी गहराई से पारम्परिक मूल्यों से प्रभावित हैं। यह स्थितियां यहां के जेंडर मानदण्ड कठोर होने की सम्भावनाओं की ओर इशारा करती हैं। इस कारण यहां के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण का अध्ययन करना प्रासंगिक हो जाता है।
इस सन्दर्भ में कुछ अध्ययनों की बात की जाये तो **जाकिर हुसैन (2010)** अपने अध्ययन **''भारत में स्कूली शिक्षा को पूरा करने में लैंगिक असमानताएँः क्षेत्रीय विविधताओं का विश्लेषण''** के आधार पर कहते हैं कि उत्तर भारत में ग्रामीण परिवेश में जबकि पूर्वी भारत में शहरी परिवेश में जेंडर असमानता का प्रभाव अधिक है। **गेटी एवं पेरेज (2014)** ने अपने अध्ययन के आधार पर कहा कि व्यवसायिक प्रगति व प्रबन्धन में जेंडर भेद कम पाया जाता है जबकि सामुदायिक सेवा और परामर्श जैसे क्षेत्रों में जेंडर भेद में तीव्रता पाई जाती है। इसी प्रकार **फुकान एवं सैकिया (2017)** अपने अध्ययन "Parental Influence, Gender Socialization and Career Aspirations of Girl Students: A Study in the Girls' Colleges of Upper Assam" के आधार पर कहते हैं कि अभिवावकों के प्रभावों के कारण लड़कियां जेंडर भूमिकाओं का अनुसरण अधिक करती हैं।

अध्ययन की आवश्यकता व महत्वः
शहरी व ग्रामीण आबादी के आधार पर बदायूं जनपद एक मिश्रित आबादी वाला क्षेत्र है, जिसमें अधिकांश लोग ग्रामीण पृष्ठभूमि से जुड़े

हुये हैं, इस कारण इस जनपद की जेंडर अवधारणायें व जेंडर मानक कठोर होने की पूर्ण सम्भावना है। जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया विद्यार्थियों की आकांक्षाओं, उनके कैरियर चयन व सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया के कारण बदायूं जनपद के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं व दृष्टिकोणों और जेंडर समाजीकरण की प्रक्रिया की संरचना की पड़ताल करने के उद्देश्य से इस प्रकार के अध्ययनों की आवश्यकता महसूस होती है।

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष बदायूं जनपद के शिक्षकों, शिक्षाविदों, प्रशासकों व शिक्षा से सम्बद्ध सभी हितकारकों को यह समझने के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण साबित होंगे कि यहां के विद्यार्थियों को किस प्रकार जेंडर संवेदनशील बनाने की दिशा में प्रयास किये जायें और किस प्रकार जेंडर मानदण्डों को लचीला बनाकर उन्हें जेंडर समानता के भाव के प्रति प्रेरित किया जाये।

अध्ययन का उद्देश्य

बदायूं जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनायें:

1. जेंडर के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. विद्यालय के बोर्ड के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. आवासीय अवस्थिति के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. शैक्षणिक वर्ग के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अभिकल्प:

प्रस्तुत शोध हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुये बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर (कक्षा–11 व 12) पर अध्ययनरत कुल 142 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। अध्ययन हेतु आंकड़े एकत्रित करने के उद्देश्य से अध्ययनकर्ता के द्वारा स्वनिर्मित शोध उपकरण **जेंडर समाजीकरण मापनी** का उपयोग किया गया है। आंकड़े एकत्रित करने हेतु प्रसम्भाव्य न्यादर्शन विधि की साधारण यादृच्छिक विधि का उपयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि:

शोध–उद्देश्यों के अनुरूप परिकल्पनाओं की जांच करने हेतु अध्ययनकर्ता द्वारा एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने के उद्देश्य से माध्य, मानक विचलन व टी–टेस्ट जैसी सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया है।

शोध का परिसीमन:

वर्तमान अध्ययन की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये इस अध्ययन को बदायूं जनपद के सी.बी.एस.ई. बोर्ड व यू.पी. बोर्ड के कुल 04 विद्यालयों तक परिसीमित किया गया है। जिसमें दोनों बोर्ड से सम्बद्ध 2–2 विद्यालयों से उच्च माध्यमिक स्तर के कुल 142 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या:

- **परिकल्पना क्रमांक 1: जेंडर के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।**

तालिका सं.1: जेंडर के आधार पर विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में अंतर

Gender	N	Mean	Std. Deviation	t-Value	Sig.
Male	51	106.94	11.814	4.185	Highly Significant (Sig.Level-0.01)
Female	91	94.74	18.837		

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)

E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

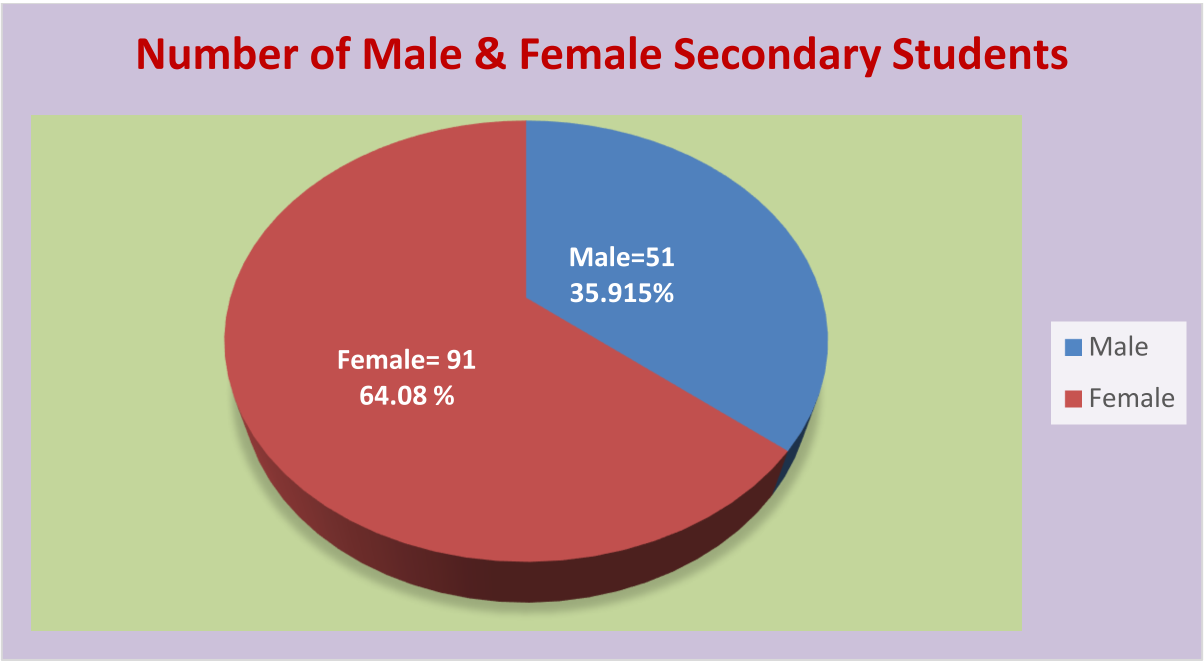

परिकल्पना क्रमांक 1 के सन्दर्भ में आंकड़ों का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

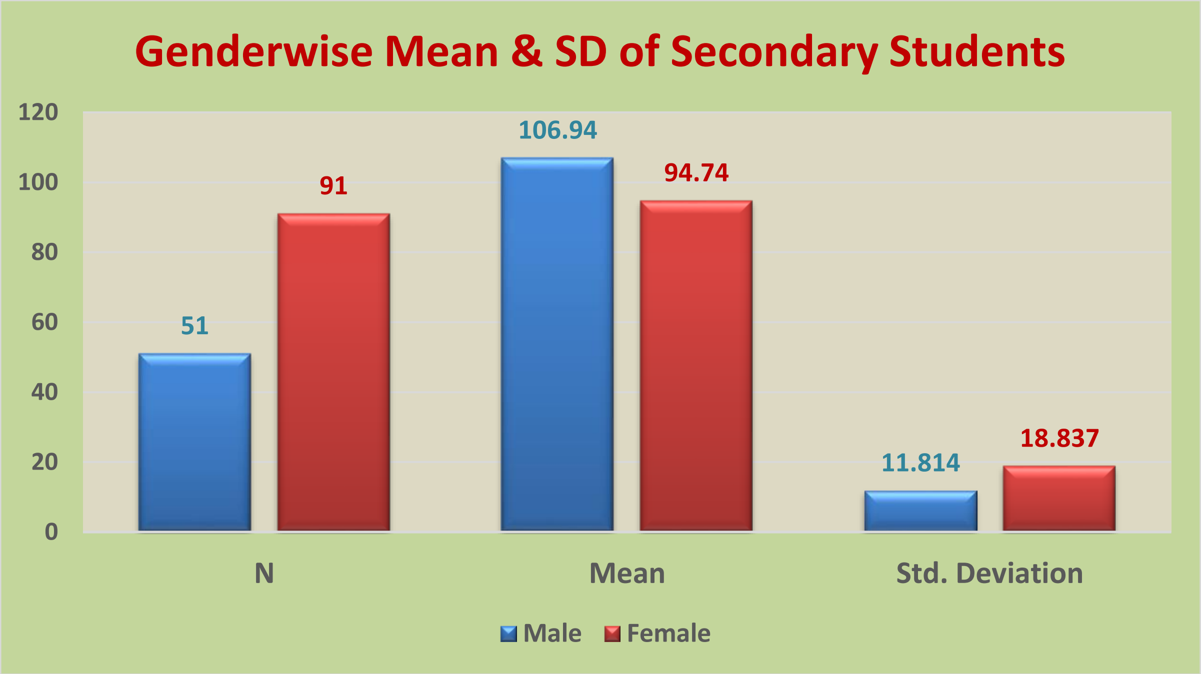

परिकल्पना क्रमांक 1 से सम्बन्धित आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या:

परिकल्पना क्रमांक 1 के सन्दर्भ में प्रस्तुत उपरोक्त तालिका में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत महिला व पुरुष विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण के प्राप्तांकों को प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कुल 51 पुरुष विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान 106.94 व मानक विचलन 11.814 है, जबकि कुल 91 महिला विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान 94.74 व मानक विचलन 18.837 है। महिला व पुरुष दोनों विद्यार्थियों के समूहों के प्राप्तांकों का टी मान 4.185 है, जोकि सार्थकता स्तर 0.01 पर दोनों समूहों के मध्य महत्वपूर्ण रूप से सार्थक अंतर की पुष्टि करता है। यहां उल्लेखनीय है कि पुरुष विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान महिला विद्यार्थियों के प्राप्तांकों से अधिक है, जो स्पष्ट रूप से इस बात का द्योतक है कि पुरुष विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण का स्तर महिला विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण के स्तर की अपेक्षा अधिक है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर **उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत जनपद बदायूं के महिला व पुरुष विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 01 अस्वीकृत की जाती है।** उल्लेखनीय है कि यहां आंकड़े इस बात की ओर स्पष्ट संकेत कर रहे हैं कि पुरुष

विद्यार्थियों पर जेंडर समाजीकरण का प्रभाव महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है, इसलिये कहा जा सकता है कि परिवार, समाज, साथी समूहों व मीडिया जैसे विभिन्न अभिकरण 21वीं सदी में भी महिला सशक्तिकरण और जेंडर समानता की बात तो करने लगे हैं, लेकिन कहीं न कहीं हम अपने समाज में लड़कों को जेंडर संवदेनशील बनाने में असफल रहे हैं। जबकि शिक्षा, वैश्वीकरण व सोशल मीडिया के प्रभाव से लड़कियां स्थापित जेंडर भूमिकाओं से बाहर निकलने हेतु प्रयासरत हैं और जेंडर रुढ़ियों को तोड़कर जेंडर समानता स्थापित करने की आकांक्षा का प्रदर्शन कर रही हैं।

गौरतलब यह भी है कि विभिन्न सामाजिक अभिकरणों द्वारा जेंडर असमानता के दुष्प्रभावों को समझकर नारी सशक्तिकरण व जेंडर समानता हेतु जो भी प्रयास किये जा रहे हैं, उनके द्वारा अधिकांश मामलों में लड़कियों व महिलाओं तक ही इन सशक्तिकरण सम्बन्धी जागरूकता कार्यक्रमों की पहुंच रहती है, फलतः लड़कियां तो जेंडर के स्थापित मानकों और मिथकों को तोड़कर जेंडर समानता आधारित समाज बनाने हेतु जागरूक हो रही हैं। लेकिन परिवार, समाज व मीडिया मिलकर विभिन्न माध्यमों से पितृसत्तात्मक भूमिकाओं व व्यवस्थाओं को आज भी पोषित कर रहा है, सम्भवतः इसी प्रभाव के चलते लड़के आज भी प्रभावी भूमिकाओं में रहकर लड़कियों व महिलाओं को अधीनता की स्थिति में देखना चाहते हैं। जेंडर समानता आधारित समाज की स्थापना हेतु बेहद आवश्यक है कि न सिर्फ लड़कियों को वरन् लड़कों को भी जेंडर संवेदनशील बनाया जाये और उन्हें जेंडर पूर्वाग्रहों से मुक्त कर न्याय की संकल्पना का बोध कराया जाये, जिससे कि एक पूर्वाग्रह और असमानता से मुक्त आदर्श समाज की स्थापना किये जाने की ओर समाज बढ़ सके।

परिकल्पना क्रमांक 2: विद्यालय के बोर्ड के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं.2: विद्यालय के बोर्ड के आधार पर विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में अंतर

Board	N	Mean	Std. Deviation	t-Value	Sig.
CBSE	80	95.29	19.247	3.028	Highly Significant
UP	62	104.06	13.924		

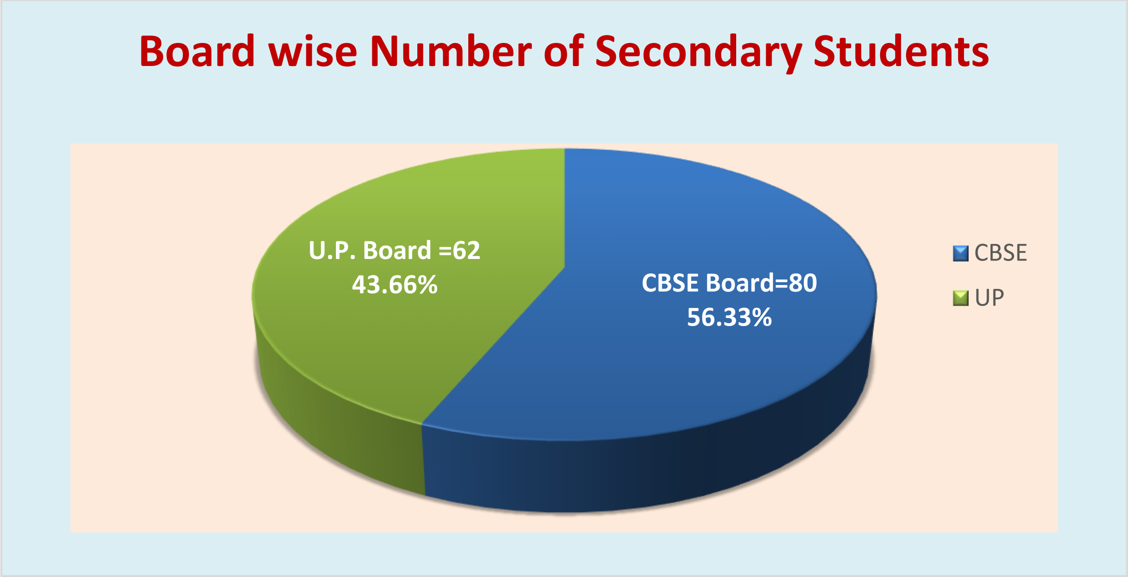

परिकल्पना क्रमांक 2 के सन्दर्भ में आंकड़ों का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

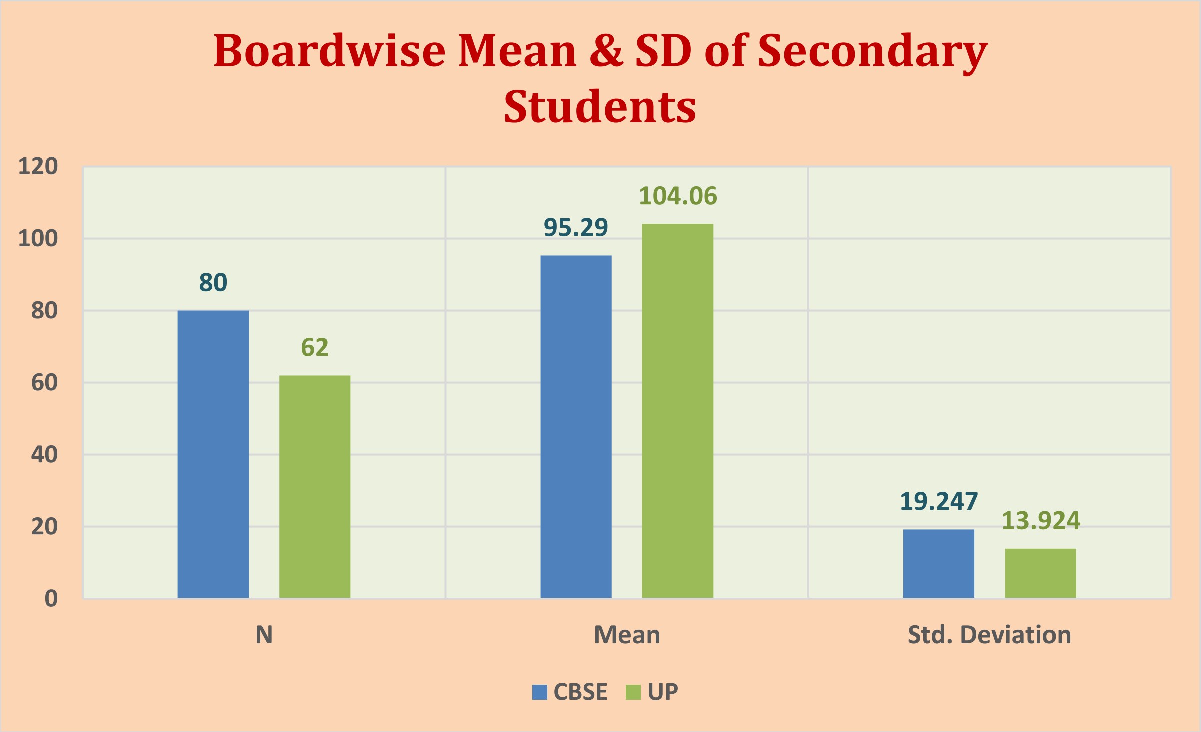

परिकल्पना क्रमांक 2 से सम्बन्धित आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्याः

परिकल्पना क्रमांक 2 के सन्दर्भ में प्रस्तुत उपरोक्त तालिका में बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत यू.पी. बोर्ड व सी. बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण के प्राप्तांकों को प्रस्तुत किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर पर सी.बी.एस.ई. बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 80 विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान 95.29 व मानक विचलन 19. 247 है, जबकि यू.पी. बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों के कुल 62 विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान 104.06 व मानक विचलन 13.924 है। सी.बी.एस.ई. व यू.पी. दोनों प्रकार के बोर्ड से सम्बन्धित समूहों के प्राप्तांकों का टी मान 3.028 है, सार्थकता स्तर 0.01 पर यह टी. मान दोनों समूहों के बीच महत्वपूर्ण सार्थक अंतर को बताता है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार **विद्यालय के बोर्ड के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 2 अस्वीकृत की जाती है।**

उल्लेखनीय है कि जेंडर समाजीकरण के सन्दर्भ में यू.पी. बोर्ड के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों के मध्यमान की अपेक्षा कहीं अधिक है, जो इस बात का स्पष्ट संकेत है कि यू.पी.बोर्ड के विद्यार्थियों पर सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों की अपेक्षा जेंडर समाजीकरण का प्रभाव अधिक है और यू.पी.बोर्ड के विद्यार्थी स्थापित जेंडर मानकों का अनुसरण सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च स्तर पर करते हैं। इस स्थिति के लिये भारतीय सामाजिक संरचना और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभावों को समझना भी आवश्यक है, वर्तमान स्थिति की बात की जाये तो सी.बी.एस.ई. बोर्ड से सम्बद्ध सरकारी विद्यालयों की संख्या यू. पी.बोर्ड से सम्बद्ध सरकारी विद्यालयों की संख्या की अपेक्षा बेहद सीमित है और सी.बी.एस.ई.बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परिवारों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति यू.पी.बोर्ड के विद्यार्थियों के परिवारों की अपेक्षा कहीं बेहतर है। उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवार प्रायः प्रगतिशील विचारों का अनुसरण जल्दी करने लगते हैं, जबकि निम्न व मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों में पारम्परिक नियमों, प्रथाओं व संस्कृति से सम्बद्ध व्यवहारों को पोषित करने की प्रवृति होती है, फलस्वरूप वे जेंडर के स्थापित मानकों को भी पोषित करते हैं और अपनी संततियों को जेंडर्ड व्यवहार करने हेतु प्रेरित करते हैं। वर्तमान स्थिति में जनपद बदायूं के यू.पी.बोर्ड में अध्ययनरत विद्यार्थी अधिकतर इन्हीं निम्न व मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवारों के हैं, अतः उनके जेंडर समाजीकरण का स्तर सी.बी.एस.ई. बोर्ड के विद्यार्थियों से अधिक होना स्वाभाविक भी है। इन स्थितियों में बेहद आवश्यक है कि सरकारी तंत्र द्वारा यू.पी.बोर्ड से सम्बन्धित विद्यालयों में भी जेंडर संवेदनशीलता का स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रम चलाये जायें व निम्न–मध्यम सामाजिक–आर्थिक स्तर वाले परिवारों को भी जेंडर समानता का महत्व समझाने के प्रयास किये जायें।

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

परिकल्पना क्रमांक 3: आवासीय अवस्थिति के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं.3: आवासीय अवस्थिति के आधार पर विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में अंतर

Locality	N	Mean	Std. Deviation	t-Value	Sig.
Rural	48	95.40	19.827	1.814	Not Significant
Urban	94	101.02	16.164		

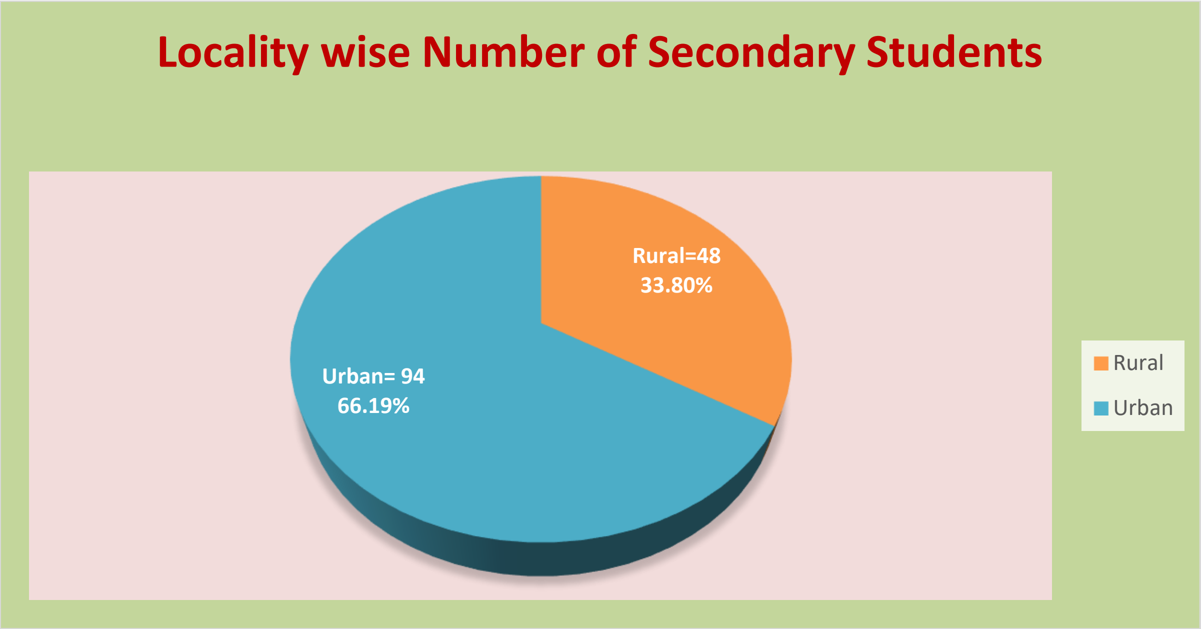

परिकल्पना क्रमांक 3 के सन्दर्भ में आंकड़ों का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

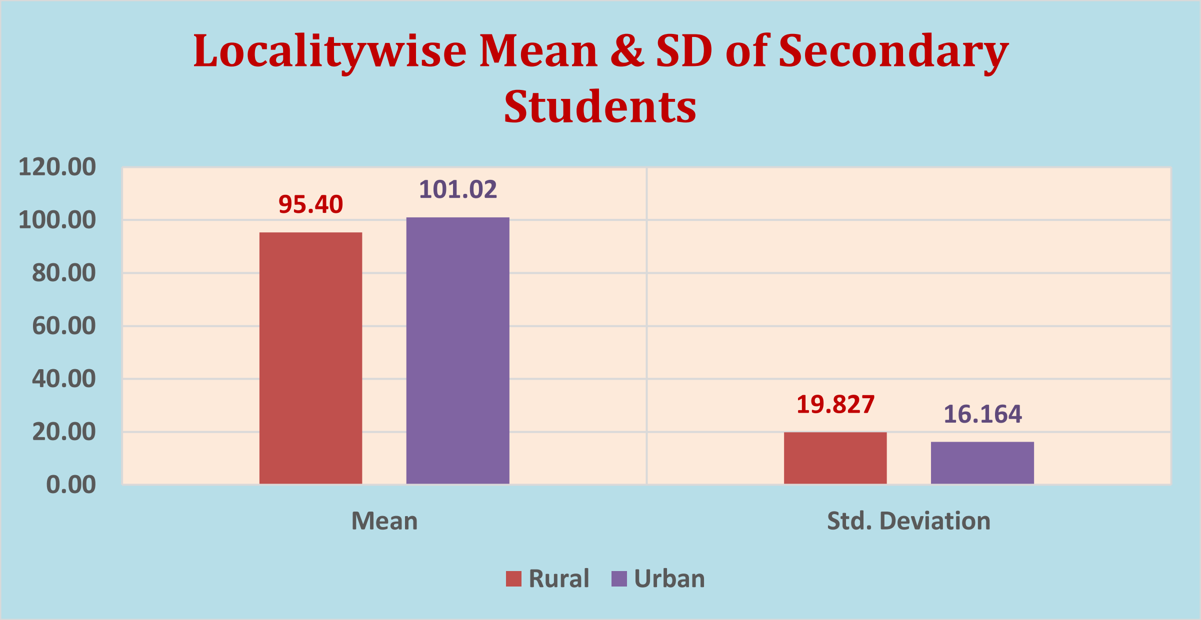

परिकल्पना क्रमांक 3 से सम्बन्धित आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या:

उपरोक्त प्रदर्शित तालिका व लेखाचित्र के माध्यम से बदायूं जनपद में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण से सम्बन्धित प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ग्रामीण व शहरी दोनों समूहों के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्य टी. मान 1.814 पाया गया, जो कि पुष्टि करता है कि **आवासीय अवस्थिति के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 स्वीकार की जाती है।** यह आंकड़े इस बात की पुष्टि करते हैं कि जेंडर के स्थापित मानकों का अनुसरण करने के मामले में बदायूं जनपद के ग्रामीण व शहरी समाजों की स्थिति में कोई व्यापक व सार्थक अंतर नहीं है। दोनों ही समाजों में जेंडर समाजीकरण का स्तर लगभग एक जैसा ही है। यहां ध्यान देने योग्य बात यह भी है कि बदायूं जनपद की सामाजिक संरचना में शहरी क्षेत्रों में निवास करने वाले परिवारों की जड़ें भी ग्रामीण पृष्ठभूमि से ही जुड़ी हैं, जिस कारण उन यह एक मिश्रित आबादी वाला जनपद है, जहां ग्रामीण परम्पराओं, प्रथाओं, संस्कृति और मानकों का गहरा प्रभाव है।

परिकल्पना क्रमांक 4: शैक्षणिक वर्ग के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका सं.4: शैक्षणिक वर्ग के आधार पर विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में अंतर

Stream	N	Mean	Std. Deviation	t-Value	Sig.
Arts & Commerce	81	102.77	15.426	2.916	Highly Significant
Science	61	94.28	19.252		

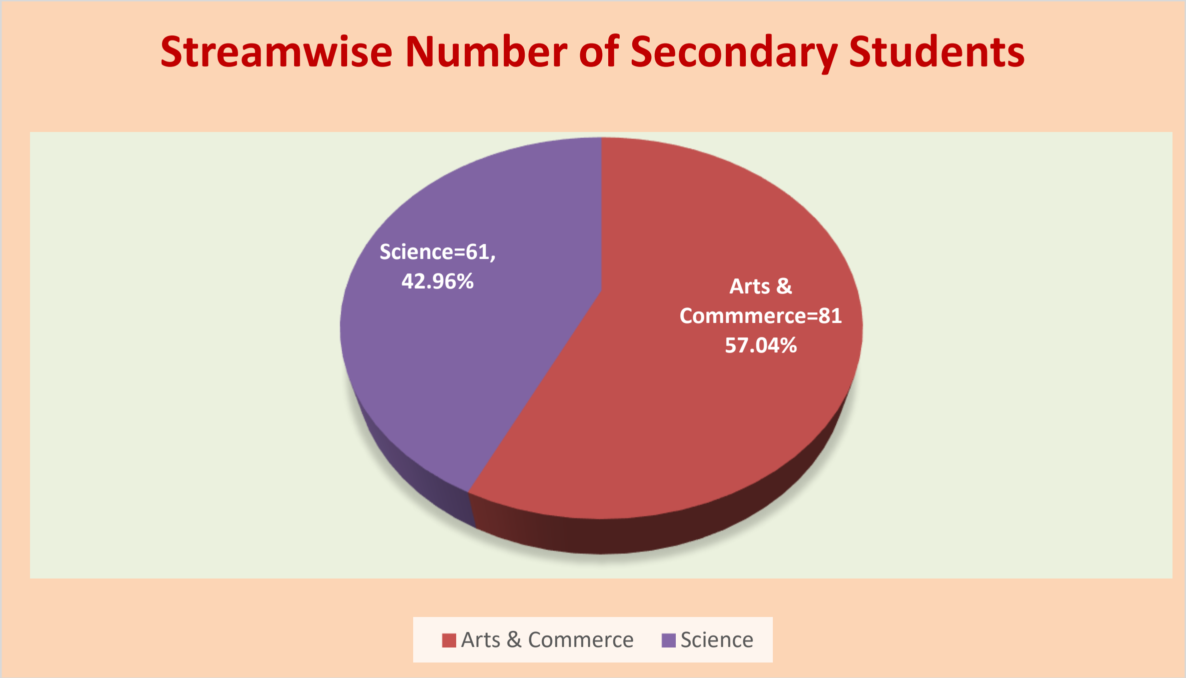

परिकल्पना क्रमांक 4 के सन्दर्भ में आंकड़ों का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

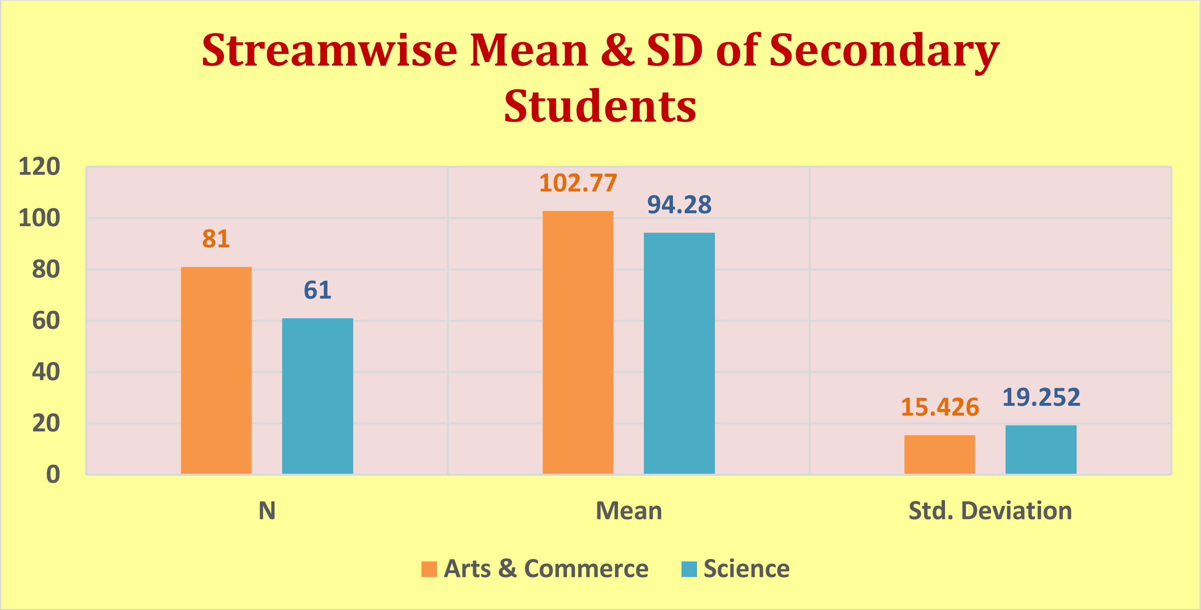

परिकल्पना क्रमांक 4 से सम्बन्धित आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या:

उल्लेखनीय है कि वर्तमान अध्ययन हेतु बदायूं जनपद के कला व वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों को एक ही समूह में रखा गया है, जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के लिये पृथक समूह में रखा गया है। उपरोक्त प्रदर्शित तालिका व लेखाचित्र के माध्यम से बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कला–वाणिज्य वर्ग व विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण से सम्बन्धित प्राप्तांकों को प्रदर्शित किया गया है। प्राप्त आंकड़ों के अनुसार बदायूं जनपद के कला–वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण से सम्बन्धित प्राप्तांकों का मध्यमान 102.77 व मानक विचलन 15.426 है, जबकि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान 94.28 व मानक विचलन 19.252 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों के मध्य टी. मान 2.916 प्राप्त हुआ जोकि सार्थकता स्तर 0.01 पर महत्वपूर्ण रूप से सार्थकता की पुष्टि करता है। प्राप्त आंकड़ों के आधार पर **शैक्षणिक वर्ग के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 4 अस्वीकृत की जाती है।**

उपरोक्त आंकड़ों पर दृष्टि डाली जाये तो स्पष्ट है कि कला–वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण के प्राप्तांकों का मध्यमान विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है, जो इस बात की पुष्टि करता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा कला–वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थी अधिक जेंडर समाजीकृत होते हैं। यथार्थ स्थिति में भी विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की तार्किक क्षमतायें व विश्लेषण करने की क्षमतायें अपेक्षाकृत अधिक विकसित होनी अपेक्षित हैं। विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी चूंकि गणित व विज्ञान विषयों का अध्ययन करते हैं, इसलिये भी उनकी वैचारिकी का अधिक वैज्ञानिक होना स्वाभाविक है। जबकि कला वर्ग के विद्यार्थी अपेक्षाकृत अधिक उदार विषयों का अध्ययन करते हैं और परम्परागत साहित्य, कला व अन्य उदार विषयों में जेंडर मानकों के अनुरूप जेंडर भूमिकाओं के प्रदर्शन की सम्भावना बनी रहती है। यही कारण है कि कला–वाणिज्य वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर जेंडर समाजीकरण का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक दिखता है।

निष्कर्ष व सुझाव:

1. अध्ययन के आधार पर उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत जनपद बदायूं के महिला व पुरुष विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 01 अस्वीकृत की जाती है।
2. अध्ययन के आंकड़ों के अनुसार विद्यालय के बोर्ड के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 2 अस्वीकृत की जाती है।
3. अध्ययन में प्रयुक्त आंकड़ों के अनुसार आवासीय अवस्थिति के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना क्रमांक 3 स्वीकार की जाती है।
4. अध्ययन से प्राप्त आंकड़ों के क्रम में शैक्षणिक वर्ग के आधार पर बदायूं जनपद के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के जेंडर समाजीकरण सार्थक अंतर पाया गया। अतः परिकल्पना क्रमांक 4 अस्वीकृत की जाती है।

उपरोक्त प्राप्त निष्कर्षों के क्रम में कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में जब समाज आर्टीफिशियल इंटैलीजेंस के युग की ओर तेजी से बढ़ रहा है, उस स्थिति में भी हम अभी जेंडर आधारित रूढ़ मान्यताओं से बाहर निकलकर जेंडर पूर्वाग्रहों से मुक्त समाज स्थापित

करने में पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सके हैं। अतः आवश्यकता है कि वृहद स्तर पर शैक्षणिक पाठ्यक्रमों, शिक्षा व्यवस्था, अध्यापक शिक्षा व सामाजिक व्यवस्था में सुधार के प्रयास इस प्रकार किये जायें कि लोग जेंडर समानता के महत्व को समझें और जेंडर समाजीकरण के दुष्प्रभावों और इसके कारण समाज में विकसित हो रहे जेंडर पूर्वाग्रहों को न्यून करने की दिशा में प्रयास किये जा सकें।

सन्दर्भ–सूचीः

1. Gati, I., & Perez, M. (2014). Gender differences in career preferences from 1990 to 2010: Gaps reduced but not eliminated. *Journal of Counseling Psychology*, *61*(1), 63. (Retrieved from: https://psycnet.apa.org/doiLanding?doi=10.1037%2Fa0034598)
2. Husain, Z. (2010). Gender disparities in completing school education in India: Analyzing regional variations. (Retrieved from: https://mpra.ub.uni-muenchen.de/id/eprint/25748)
3. Phukan, D., & Saikia, J. (2017). Parental Influence, Gender Socialization and Career Aspirations of Girl Students: A Study in the Girls' Colleges of Upper Assam. *International Journal of Research*, *31*. (retrieved from: http://www.ijrhss.org/papers/v4-i2/4.pdf)
4. पंकज यादव व प्रो. दीप्ति जौहरी (डा.) (2023), जेंडर आधारित हिंसा से प्रभावित स्त्रियों के मामलों पर एक विश्लेषण. *Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS) eISSN–2583-6986*, *2*(09), 145-159.
5. पंकज यादव व प्रो. (डा.) दीप्ति जौहरी (2024). भारत में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कैरियर आकांक्षाओं और जेंडर समाजीकरण के मध्य सम्बन्धः एक विमर्श. *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology (IJMRAST)*, *2*(9), 55-64. (DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i9.82)
6. प्रो. दीप्ति जौहरी (2024), भारतीय सामाजिक परिवर्तन में सावित्रीबाई फुले के अथक प्रयासों का विश्लेषण. *International Journal of Multidisciplinary Research in Arts, Science and Technology*, *2*(6), 37-41. (DOI: https://doi.org/10.61778/ijmrast.v2i6.65)